

अहंकार तत्व की ग्लानि से हड्डियों की बीमारियों का समापन

मनुष्य की शरीर अनेक तत्वों से मिलकर बनी

है। हर तत्व का अपना-अपना अहंकार है। अहंकार एक ऐसी शक्ति है जिसके कारण हर तत्व अपने मौलिक रूप में बने रहते हैं। हड्डियों का अपना अहंकार है जिसके कारण हड्डी, हड्डी के रूप में बनी रहना चाहती है। आँख चाहे कितना भी अच्छा देखे, कान चाहे कितना भी अच्छा सुने परन्तु हड्डी कभी भी नहीं कहती है कि हम कान बन जाय या आँख बन जाय। अगर हड्डी का अहंकार गायब हो जाय और हड्डी कह दे कि आँख रोज देखती है आज हम देखेंगे और हड्डी आँख बन जाय तो शरीर के भौतिक रूप को बनाए रखना मुश्किल हो जाएगा। शरीर के दृश्य रूप को बनाए रखने के लिए अहंकार शक्ति का इतना क्रियाशील रहना आवश्यक है ताकि हर तत्व अपने मौलिक रूप में बने रहे। इसके साथ ही साथ यह भी आवश्यक है कि अहंकार तत्व जरूरत से ज्यादा न बढ़े। अहंकार का एक और गुण होता है, वह अपना विस्तार चाहता है। हड्डी के अंदर की अहंकार शक्ति के बढ़ने पर हड्डी का वजन, आकार-प्रकार बढ़ने लगता है जिससे हड्डी से संबंधित बीमारियाँ प्रकट होती हैं। हड्डी के नीचे एक कुशन पैड होता है जिसके कारण हड्डी अपने जोड़ों से आसानी से हिलती है। हड्डी के अंदर अहंकार तत्व बढ़ने पर हड्डी का आकार बढ़ने लगता है



और हड्डी बढ़ती हुई कुशन पैड को दबा देती है। ऐसा होने पर हड्डी अपने जोड़ों से आसानी से हिल नहीं पाती है और जोड़ों में सूजन आ जाती है जिसे गठिया कहते हैं। अहंकार तत्व के बढ़ने के कारण हड्डियों में सुराख हो

जाता है जिसे बुढ़ापे की हड्डी कहा जाता है। हड्डियाँ अनेक कोशिकाओं से मिलकर बनती हैं। इन कोशिकाओं को आस्ट्रियोसाइट्स कहते हैं। हड्डियों के अंदर अहंकार तत्व बढ़ने पर हड्डियों की कोशिकाएँ आस्ट्रियोसाइट्स की जनसंख्या बढ़ती है। जिस प्रकार किसी स्थान पर भीड़ बढ़ने पर लोग एक-दूसरे को दबा देते हैं और ज्यादा भीड़ बढ़ने पर लोग एक दूसरे से दबकर मर भी जाते हैं। उसी प्रकार हड्डियों में अहंकार तत्व के बढ़ने पर हड्डियों की कोशिकाओं की जनसंख्या बढ़ती है। ऐसा होने पर एक कोशिका दूसरी कोशिका को दबाने लगती है जिससे अनेक कोशिकाएँ दबकर मर जाती हैं। हड्डियों में जिस जगह की कोशिकाएँ मर जाती हैं वहाँ पर सुराख हो जाता है जिसे बुढ़ापे की हड्डी कहते हैं। ऐसी अवस्था में फिसलकर गिरने पर भी हड्डी टूट जाती है। अतः हड्डियों में बुढ़ापे का आना या गठिया अथवा हड्डियों से संबंधित अन्य रोगों का कारण है हड्डियों में अहंकार तत्व की वृद्धि। क्रियायोग का अभ्यास करने पर अहंकार तत्व की ग्लानि होती है। अहंकार तत्व केवल इतना रहता है ताकि शरीर की हड्डियाँ, त्वचा, मांसपेशियाँ, रक्त और अन्य सारे तत्व अपने मौलिक रूप में बने रहे और किसी भी तत्व की अनावश्यक वृद्धि न हो। ऐसा होने पर स्वतः हड्डियों की सम्पूर्ण बीमारियाँ समाप्त हो जाती हैं। क्रियायोग का अभ्यास करने पर हड्डियों के सुराख भी भर जाते हैं, जिससे बुढ़ापे की हड्डी नयी उम्र की हड्डी में बदल जाती है।

Ego Divinely-Tuned Cures All Illness Even Osteoporosis

Over time it has been proved that many illnesses have been cured through the practice of Kriyayoga. The sincere and regular practice of Kriyayoga has helped many to regain physical and mental health through rediscovering the source of everything in this Cosmos - God. Seeking God solves all kinds of problems in life - physical, mental, family, social, national and international. It is, therefore, not surprising when through the practice of Kriyayoga, a Kriyayoga practitioner, Ann Edwards from Toronto, Canada was cured of her condition of osteoporosis after only a short term of practice.

How does Kriyayoga cure osteoporosis? To understand, let us first understand what osteoporosis is.

In medical terms, osteoporosis is defined as a generalized progressive diminution in the bone tissue mass, which is a reduction in the amount of bone, causing weakness in skeletal strength.

What is the cause of reduction in the amount of bone? Our body is made up of many elements and each element has its own ego. One characteristic of ego is that it does not want to change its form. It is due to this

ego that each element is able to retain its form. As an example, even though the eyes have the ability to see many wonderful things, the ear will not want to become the eyes. As a result, the ear remains as ear.

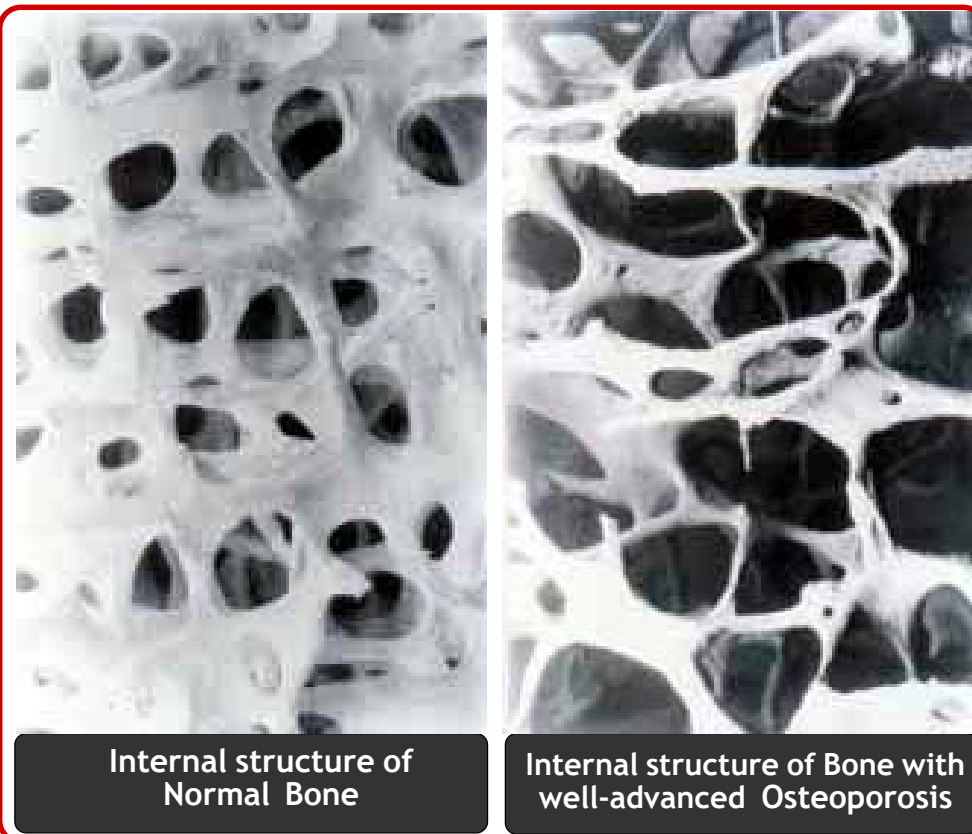
Another characteristic of ego is that it attempts in all ways to expand its form. Let us take the bone as an example in this instance. As the ego of the bone increases, it changes in size, volume and weight. As the size increases, taking over the space of other ele-

ments that come in its way, the cushion pad at the end of the bone becomes crushed and thereafter, it becomes swollen. This causes tremendous pain when that overgrown bone is moved. The condition as described above is known as arthritis.

When the ego of the bone increases and the bone expands due to the growth of each cell, then each cell steps over the space of other cells around it causing a stampede situation to occur. Some cells die and cracks and pores appear in the bone. The bone then becomes brittle and is fractured easily. Such is the condition of old-age bone. This is also known as osteoporosis.

So how does Kriyayoga help with the condition? In

Kriyayoga, ego is directed towards divinity and so there is only that much ego that sustains the form of the element. Due to this, there is no excessive growth of the element and so problems of cracks and pores do not take place. As well, if there are cracks and pores in the bone, they become filled. In this way, old-age bone is transformed into young adult bone and the cure of osteoporosis takes place.



Internal structure of Normal Bone

Internal structure of Bone with well-advanced Osteoporosis